15 बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ

रामदरश मिश्र

(जन्म : सन् 1924 ई.)

रामदरश मिश्र का जन्म गाँव डुमरी, जनपद गोरखपुर में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा पास के गाँव बिशनपुर में हुई। उन्होंने मैट्रिक, इन्टर और उच्च शिक्षा बनारस से प्राप्त की। वे दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर दिल्ली में बसे हुए हैं।

'पथ के गीत', 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'दिन एक नदी बन गया', 'बाजार को निकले हैं लोग', 'जुलूस कहाँ जा रहा है', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'बारिश में भीगते बच्चे', 'आग की हँसी' आदि उनके कविता-संग्रह हैं। 'हँसी ओठ पर', 'आँख नम है', 'ऐ ऐसे में जब कभी', 'आम के पत्ते', 'तू ही बता ए जिन्दगी', 'हवाएँ साथ हैं' आदि उनके गज़ल संग्रह हैं। 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'सूखता हुआ तालाब', 'अपने लोग', 'रात का सफर', 'आकाश की छत', 'आदिम राग', 'बिना दरवाजे का मकान', 'दूसरा घर', 'थकी हुई सुबह', 'बीस बरस', 'परिवार', 'बचपन भास्कर का' आदि उनके उपन्यास हैं। 'खाली घर', 'एक वह दिनचर्या', 'सर्पदंश', 'वसंत का एक दिन' आदि उनके कहानी-संग्रह हैं। उन्होंने ललित निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, डायरी, संस्मरण जैसी विधाओं में रचना की हैं। मिश्रजी कवि शेखर सम्मान, शलाका सम्मान, साहित्यकार, सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, साहित्य विद्यावाचस्पति सम्मान, व्यास सम्मान, दिल्ली साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

इस कविता में डाकिया के माध्यम से कवि ने एक ऐसे किरदार की रचना की है जो दु:ख दर्द और अकेलेपन से पीड़ित लोगों तक मानवीय संवेदनाएँ और उम्मीद बाँटता फिरता है। डाकिया एक ऐसा बिम्ब है, जो उन लोगों तक सहानुभूति और करुणा पहुँचाने का काम करता है, जिनका अपना कोई नहीं है। कवि कहता है कि बिना नाम और पते की चिट्ठियाँ जिन पर भेजनेवालों ने जरूरी डाक टिकट भी नहीं लगाया है ऐसी चिट्ठियों को किसी एक व्यक्ति तक पहुँचाने के बजाय डाकिया समाज के संपूर्ण पीड़ित समुदाय को पहुँचाकर आश्वत करना चाहता है।

कब से,
यह बैरंग बेनाम चिट्ठी लिये हुए
यह डाकिया दर-दर घूम रहा है!
कोई नहीं वारिस इस चिट्ठी का।
कौन जाने
किसका अनकहा दर्द किसके नाम
इस बन्द लिफाफे में
पत्ते की तरह काँप रहा है?
मैं ने भी तो एक बैरंग चिट्ठी छोड़ी है
पता नहीं किसके नाम?
शायद वह भी इसी तरह
सतरों के ओठों में अपने दर्द कसे
यहाँ वहाँ घूम रही होगी।
मित्रो!
हमारी तुम्हारी ये बैरंग लावारिस चिट्ठियाँ
किसी दिन लावारिस जगहों पर
परकटे पंछी की तरह
पड़ी-पड़ी फड़फड़ायेंगी
और कभी-किसी दिन कोई अजनबी
इन्हें कौतूहलवश उठाकर पढ़ेगा
तो तड़प उठेगा :
ओह!

बहुत दिन पहले किसी ने
ये चिट्ठियाँ
शायद मेरे ही नाम लिखी थीं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ बिना टिकट की तथा बिना पते की चिट्ठियाँ **अनकहा** जो कहा न गया हो **सतर** लिखी हुई पंक्ति **लावारिस** जिसका अपना कोई न हो **परकटे** जिसके पंख कट गए हों **वारिस** उत्तराधिकारी (यहाँ मालिक)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) डाकिया दर-दर क्या लेकर घूम रहा है?
(क) कागज़ (ख) बैरंग बेनाम चिट्ठी
(ग) कार्ड (घ) तार

(2) बैरंग बेनाम चिट्ठियों का कौन नहीं है?
(क) वारिस (ख) नौकर (ग) मालिक (घ) सद्‌भाव

(3) बंद लिफाफे में अनकहा दर्द किस तरह काँप रहा है?
(क) वृक्ष की तरह (ख) पत्ते की तरह (ग) कागज की तरह (घ) शैवाल की तरह

(4) बैरंग बेनाम चिट्ठी में कैसा दर्द है?
(क) अनकहा (ख) सच कहा (ग) झूठ कहा (घ) सुना गया

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि ने कैसी चिट्ठी छोड़ी है?
(2) बैरंग चिट्ठी किसे कहते हैं?
(3) कवि ने चिट्ठी की तुलना किससे की है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) डाकिया चिट्ठी लेकर कहाँ - कहाँ घूम रहा है?
(2) चिट्ठियों में क्या काँप रहा है?
(3) कवि को इन चिट्ठियों से किस तरह की उम्मीद है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए :

(1) बैरंग चिट्ठी में लिखे दुख-दर्द का वर्णन कीजिए?
(2) कवि बैरंग चिट्ठी को परकटा पंछी क्यों कहता है?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) हमारी तुम्हारी ये बैरंग लावारिस चिट्ठियाँ, किसी दिन लावारिस जगहों पर परकटे पंछी की तरह, पड़ी-पड़ी फड़फड़ाएँगी।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः 'आग की हँसी' कविता-संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः रामदरश मिश्र की कुछ अन्य कविताएँ विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ ।